अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : तृतीय - जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 08 जनवरी, 2017)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

सावधान

1. परीक्षा में नकल नहीं करें। 2. प्रामाणिकता से परीक्षा देकर ईमानदारी का परिचय दे।
3. मायावी नहीं मेधावी बनें। 4. नकल से नहीं अकल से कम लें।

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
5. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	6	कुल योग
प्राप्तांक							
पूर्णांक	10	10	10	20	18	32	100
पुनः जाँच							

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) तीर्थंकर नाम प्रकृति है -

(क) पुण्य (ख) पाप

(ग) संवर (घ) आश्रव ( )

(b) बिखुरा भेद है -

(क) खेचर (ख) स्थलचर

(ग) उरपरिसर्प (घ) भुजपरिसर्प ( )

(c) संवर तत्त्व के उत्कृष्ट भेद होते हैं -

(क) 20 (ख) 18

(ग) 57 (घ) 42 ( )

(d) जयंतीबाई के प्रश्न वर्णित हैं -

(क) नन्दी सूत्र (ख) आवश्यक सूत्र

(ग) भगवती सूत्र (घ) सूखविपाक सूत्र ( )

(e) किस कारण से जीव संसार सागर में परिभ्रमण करता है-

(क) पाप के सेवन से (ख) पुण्य के सेवन से

(ग) संवर के सेवन से (घ) लोभ के सेवन से ( )

(f) भव भ्रमण के थोकड़े का वर्णन भगवती सूत्र के किस उद्देश्यक में किया गया है-

(क) 5वें उद्देशक (ख) 7वें उद्देशक

(ग) 8वें उद्देशक (घ) 12वें उद्देशक ( )

(g) लोक की विशेषता नहीं है-

(क) शाश्वत (ख) अनादि

(ग) नित्य (घ) नश्वर ( )

(h) आठवें देवलोक में श्वासोच्छवास का जघन्य काल है-

(क)14 पक्ष (ख) 17 पक्ष

(ग) 22 पक्ष (घ) 10 पक्ष ( )

(i) किस श्रमण निर्ग्रन्थ का सुख चन्द्र-सूर्य ज्योतिषी देवों से बढ़कर होता है-

(क) दो मास की दीक्षा पर्याय वाले श्रमण का

(ख) तीन मास की दीक्षा पर्याय वाले श्रमण का

(ग) चार मास की दीक्षा पर्याय वाले श्रमण का

(घ) पाँच मास की दीक्षा पर्याय वाले श्रमण का ( )

(j) भगवती सूत्र में निर्ग्रन्थों के सुख के लिए किस शब्द का प्रयोग किया गया है-

(क) शुक्ल लेश्या (ख) तेजो लेश्या

(ग) पदम लेश्या (घ) कृष्ण लेश्या ( )

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1 = (10)**

(a) तणा प्रत्येक वनस्पति का भेद है। ( )

(b) संवर भावना समुद्रपाल मुनि ने भाई थी। ( )

(c) द्वेष भावना रखने से लगने वाली क्रिया पाओसिया क्रिया है। ( )

(d) अधर्मी जीव सोते हुए अच्छे होते हैं। ( )

(e) अव्यवहार राशि में अभवी जीव ही होते हैं। ( )

(f) जीव अपने कर्मानुसार ही जन्म-मरण करता है। ( )

(g) सर्वार्थसिद्ध विमान में जीव एक से अधिक बार जन्म लेता है। ( )

(h) दुःखी जीव की श्वासोच्छ्वास क्रिया अधिक और शीघ्र चलती है। ( )

(i) आठवीं ग्रैवेयक के देव का जघन्य श्वासोच्छ्वास 20 पक्ष होता है। ( )

(j) एक मास की दीक्षा पर्याय का पालन करने वाले श्रमण निर्ग्रन्थ का सुख वाणव्यन्तर देवों के सुख से बढ़कर होता है। ( )

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **10x1 = (10)**

(a)	नाराच	(क) आश्रव	.....
(b)	पेज्जवत्तिया	(ख) शालिभद्रजी	.....
(c)	संसार भावना	(ग) प्रायश्चित्त	.....
(d)	पादपोपगमन	(घ) मोक्ष	.....
(e)	प्रतिक्रमण	(च) अनशन	.....
(f)	भवसिद्धिक जीव	(छ) संहनन	.....
(g)	आकाश श्रेणी	(ज) सर्वार्थसिद्ध विमान	.....
(h)	पुनः जन्म नहीं	(झ) स्पर्शनेन्द्रिय	.....
(i)	निगोद की स्थिति	(य) अनादि अनंत	.....
(j)	एकेन्द्रिय जीव का श्वासोछ्वास	(र) पुद्गल परावर्तन काल	.....

प्र.4 मुझे पहचानो :- **10x2 = (20)**

(a) हम स्वयमेव बोध प्राप्त करके मोक्ष में जाते हैं। .....

(b) मैं चारित्र विनय का पाँचवाँ भेद हूँ। .....

(c) मेरे उत्कृष्ट 57 भेद होते हैं। .....

(d) मैं ऐसा पाप हूँ, जो दूसरों की चुगली करने से प्रकट होता हूँ। .....

(e) मैं शरीर के अशुभ योगों से लगने वाली क्रिया हूँ। .....

(f) मैने अशुचि भावना भाई थी। .....

(g) मेरा त्याग करने से जीव संसार सें तिर जाता है। .....

(h) मेरी उत्कृष्ट स्थिति 2.5 पुद्गल परावर्त्तन काल बतलाई है। .....

(I) मेरा श्वासोच्छ्वास जघन्य 23 पक्ष में और उत्कृष्ट 24 पक्ष में होता है। .....

(j) मैने एक दिन के संयम पर्याय में ही शाश्वत सिद्धि रूप सुख को प्राप्त कर लिया था। .....

प्र.5 एक या दो वाक्यों में उत्तर दीजिए। (कोई 9) **9x2 = (18)**

(a) नवतत्त्वों को जानने से जीव को क्या लाभ प्राप्त होता है ?

.....

.....

.....

(b) सिद्धों में कौन-कौनसे भाव पाये जाते हैं ?

.....

.....

.....

(c) अनुभाग बन्ध किसे कहते हैं ?

.....

.....

.....

(d) **अपायानुप्रेक्षा एवं अशुभानुप्रेक्षा का अर्थ लिखिए।**

.....

.....

.....

(e) **अकर्मभूमि किसे कहते हैं ? इसके कितने क्षेत्र होते हैं ?**

.....

.....

.....

(f) **जीवों का भवसिद्धिपना स्वभाव से है, या परिणाम से ?**

.....

.....

.....

(g) **कौनसे जीव सोते हुए अच्छे होते हैं ?**

.....

.....

.....

(h) **अहो भगवन्! यह लोक कितना बड़ा है ?**

.....

.....

.....

(i) **जीव कौन-कौन सी इन्द्रियों के द्वारा श्वासोच्छ्वास लेता है ?**

.....

.....

.....

(j) **कौनसा साधु तेजो लेश्या रूप सुख की अनुभूति करने वाला होता है ?**

.....

.....

.....

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार वाक्यों में लिखिए : -(कोई-8) **8x4=(32)**

(a) **धर्मध्यान के चार लक्षण लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(b) **भवनपति, परमाधामी और वाणव्यन्तर देवों के भेदों के नाम लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(c) **प्रायश्चित्त लेने वाले के आठ गुण लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(d) **श्रोत्रेन्द्रिय के वश में हुआ जीव कैसे कर्म बांधता है ?**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(e) **भगवान द्वारा अपने प्रश्नों का समाधान पाने पर जयंतीबाई के जीवन में क्या परिवर्तन हुआ ?**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(f) **देवताओं के श्वासोच्छ्वास की प्रक्रिया को समझाइए ।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(g) **जीव के सुख-दु:ख से श्वासोच्छ्वास क्रिया का क्या सम्बन्ध है ? स्पष्ट कीजिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(h) **श्रमण निर्ग्रन्थों के संयम-सुख में उत्तरोत्तर वृद्धि कब होती है ?**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(I) **नाम कर्म के उदय से होनी वाली पुण्य की 37 प्रकृतियों के नाम लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....